पाँच आज्ञा ही मोक्ष ळे

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

भगवान ऋषभ अवसर्पणी काल के प्रथम तीर्थंकर थे। उनके सौ पुत्र थे। निन्यानवें पुत्र क्रममार्ग से मोक्षगामी हो गये। केवल भरत ही शेष थे। भरत राज्य कार्य का संचालन करते थे। एक बार भरत ने भगवान ऋषभ से प्रार्थना की कि निन्यानवें भाई मोक्षगामी हो गये, मेरे जीवन का क्या होगा। भगवान ऋषभ ने उन्हें अक्रम विज्ञान दिया। अक्रम विज्ञान लिफ्ट का मार्ग है और क्रमविज्ञान सीढ़ियों से ऊपर चढ़ने का मार्ग है। भरत अक्रम विज्ञान से मोक्षगामी हुए। अम्बालाल मूलजीभाई पटेल के नाम से प्रसिद्ध व्यक्ति ज्ञान प्राप्त करने के बाद एक सर्वज्ञ के रूप में दादा भगवान के नाम से प्रसिद्ध हुए। दादा भगवान ने एक दर्शन दिया उनका दर्शन जीवन को मोक्ष दिलाने में समर्थ है। उनका कहना था कि दादा भगवान किसी व्यक्ति का नाम नहीं, बल्कि उनके अन्दर विद्यमान जो आत्मा है, उसका नाम है दादा भगवान। उन्होंने अक्रम विज्ञान का उपदेश किया, उन्होने पाँच आज्ञाएं दीं। इन पाँचों आज्ञाओं का पालन करने से भव क्षीण हो जाता है। इन आज्ञाओं से संवर की प्राप्ति होती है। सम्यक् दर्शन, ज्ञान चारित्र और तप को मोक्ष मार्ग बतलाया गया है। यह ज्ञानी की कृपा से ही प्राप्त होता है। अक्रम विज्ञान कृपा का मार्ग है।

दादा भगवान के द्वारा उपदिष्ट पांच आज्ञाएं मोक्ष मार्ग हैं। इससे क्रोध, मान, माया, लोभ रूप जहर नष्ट हो जाता है। टकराव टालिए, प्रतिक्रिया विरति, एडजेस्ट एब्रीह्वेयर, कर्त्ता व्यवस्थित शक्ति, कुदरत का कानून उनके द्वारा बतलाये गये मार्ग हैं। इन मार्गों का अनुकरण करने से मनुष्य मोक्ष प्राप्त करता है। कोई छोटा नहीं, कोई तुच्छ नहीं, कोई पराया नहीं। अपनत्व और सम्मान का जितना अधिक विस्तार होगा, टकराव का विष उतना ही नष्ट होता हुआ चला जाएगा। क्रम का अर्थ है– क्रमशः धीरे–धीरे आगे बढ़ना। अक्रम का अर्थ है– क्रमशः न

चलकर एक छलांग में ऊंची उड़ान भरकर लक्ष्य को प्राप्त कर लेना। क्रम और अक्रम का अपना एक विज्ञान है।

दादा भगवान ने जीवनोपयोगी सूत्र दिया है– भुगते उसी की भूल। इस जगत में भूल किसकी चोर की या जिसका चोरी हुआ उसका? इन दोनों में से भुगत कौन रहा है? जिसका चोरी हुआ वहीं भुगत रहा है। चोर तो पकड़े जाने के बाद भुगतेगा और उसके कृत्य का दण्ड उसे मिलेगा। आज खुद की भूल का दण्ड मिल गया। खुद भुगते तो फिर दोष किसे देना। भूल है, तब तक भुगतना पड़ता है। जब भूल खत्म हो जायेगी, तब इस दुनिया की कोई भी शक्ति भुगतने के लिये दण्ड नहीं देगी। इस संसार में यदि मानव कोई गलती करता है तो न्यायालय उसे दण्ड देता है। अपने किये गये कर्मो का कुदरती न्यायाधीश एक ही है। उसका एक ही न्याय है। उसके न्याय से पूरा जगत चल रहा है। जिसे इनाम देना है, वह उसे इनाम देता है, जिसे दण्ड देना है वह उसे दण्ड देता है। हमारे कर्मों का लेखा–जोखा ईश्वर के पास सुरक्षित रहता है। वह सबसे बड़ा न्यायाधीश है। न्यायालयों में कभी किसी के साथ गलती हो सकती है किन्तु ईश्वर के न्यायालय में कभी गलती नहीं होती। इसीलिए कहा गया है कि हुआ सो न्याय। हमारे साथ जो कुछ भी घटनाएं घट रही हैं, उन्हें समभाव से देखना चाहिए। सम्पूर्ण प्राणी इस जीवन में सापेक्ष जीवन जी रहे हैं। यह शरीर रिलेटिव है। रियल तत्व आत्मा है उसको जानना ही वास्तविक ज्ञान है। इस शरीर के अन्दर ज्ञानेन्द्रियां, कर्मेन्द्रियां और मन तथा अन्तःकरण विराजमान है। शरीर और आत्मा के संयोग से अहंकार और राग–द्वेष पैदा होता है। इस अहंकार को समाप्त करना ही मनुष्य का सबसे बड़ा कर्तव्य है। कर्त्ता व्यवस्थित शक्ति है। संयोग से द्रव्यक्षेत्र, काल और भाव के अनुसार यह सृष्टि चल रही है। सृष्टि को चलाने वाले धर्म, अधर्म, आकाश, काल, पुद्गल और जीव ये छः तत्व हैं। इन्हीं छः तत्वों से सृष्टि संचालित है। मैं सब कुछ करता हूं, सब कुछ मेरे अधीन है यह कर्त्ता अहंकार का मूल है इसे त्याग देना चाहिए। अपने को कर्त्ता नहीं मानना चाहिए। मैं तो एक निमित्त मात्र हूं।

फाईलों का सम्भाव से निपटारा करना महत्वपूर्ण आज्ञा है। समाज या परिवार में हमारे साथ कार्य करने वाले जितने भी लोग हैं वे सभी फाइल कहलाते हैं। पत्नी, बेटा, बेटी, माता–पिता, बन्धु–बान्धव जितने भी लोगों से हमारा सम्बन्ध है वे सभी फाईल रूप में हैं। इनके साथ

सम्भाव रखना चाहिए। जो भी कुछ भुगतान चल रहा है उसे बाईपास करना चाहिए, उसके साथ आसक्ति नहीं होनी चाहिए। यह जगत् निर्दोश है, सब कुछ मेरा दोष है, यह महत्वपूर्ण आज्ञा है। चौरासी लाख जीव योनियों के प्राणी मेरे लिए निर्दोष हैं, किसी का दोष नहीं है। हमें अपने दोषों की आलोचना, प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान करते रहना चाहिए। टकराव टालिए यह महत्वपूर्ण आज्ञा है। हर क्रिया की प्रतिक्रिया होती है, लेकिन क्रिया की प्रतिक्रिया नहीं करनी चाहिए। प्रतिक्रिया ही राग–द्वेष बढ़ाती है। सबसे सामजस्य बनाकर रहना चाहिए। एडजेस्ट एब्रीव्हेयर का सिद्धान्त यही है। व्यवहार मुक्ति के बिना, निश्चय मुक्ति नहीं होती। इसलिए सबसे क्षमा याचना करनी चाहिए। क्षमा याचना के बाद ही मुक्ति प्राप्त होती है। जो कुछ भी हो रहा है उसे अपने कर्तव्यों का प्रतिफल मानकर स्वीकार करना चाहिए। किसी पर दोषारोपण नहीं करना चाहिए। ये पाँच आज्ञाएं मोक्ष साधिका हैं।